

# NEXT IAS

## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

भारत के लिए संकेत के रूप में वैश्विक भ्रष्टाचार  
की तीव्र होती प्रवृत्ति

---

[www.nextias.com](http://www.nextias.com)

## भारत के लिए संकेत के रूप में वैश्विक भ्रष्टाचार की तीव्र होती प्रवृत्ति

### संदर्भ

- ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा प्रकाशित भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2025 वैश्विक स्तर पर तीव्र होती भ्रष्टाचार की चिंताजनक प्रवृत्ति को उजागर करता है, जो लोकतांत्रिक जवाबदेही को कमजोर कर रही है।
- इस परिप्रेक्ष्य में, भारत का प्रदर्शन “शासन ठहराव” की स्थिति को दर्शाता है, जो इसकी तीव्र आर्थिक वृद्धि और संस्थागत विकास के बीच गंभीर अंतराल को उजागर करता है।

### भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2025 में भारत की स्थिति

- **रैंक और स्कोर:** भारत 182 देशों में 91वें स्थान पर है, स्कोर 39 के साथ, जो इसे वैश्विक तालिका के निचले आधे हिस्से में रखता है।
- **एक दशक का ठहराव:** विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने और 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की आकांक्षा के बावजूद, भारत का CPI स्कोर विगत दशक में केवल 38 से 41 के बीच रहा है (2014 में स्कोर 38)।
- **वैश्विक और क्षेत्रीय तुलना:** भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे पड़ोसियों से बेहतर प्रदर्शन करता है, लेकिन चीन (स्कोर 42) से पीछे है एवं श्रीलंका के लगभग बराबर है।
- इसके अतिरिक्त, भारत कई उच्च-मध्यम आय वाले लोकतंत्रों और पूर्वी एशियाई/यूरोपीय देशों से पीछे है, जिन्होंने पारदर्शिता ढाँचे और संस्थागत स्वतंत्रता को सफलतापूर्वक सुदृढ़ किया है।

### भ्रष्टाचार के प्रभाव और निहितार्थ

- निम्न CPI स्कोर निगरानी, जवाबदेही और सार्वजनिक क्षेत्र की अखंडता में स्थायी कमजोरियों का संकेत देता है, जो प्रत्यक्ष रूप से संप्रभु जोखिम आकलन और दीर्घकालिक पूंजी आवंटन को प्रभावित करता है।
- **बहुआयामी निहितार्थ:**
  - **प्रत्यक्ष आर्थिक हानि:** भ्रष्टाचार लेन-देन की अनिश्चितता बढ़ाता है और उद्यमशील ऊर्जा को मूल्य सृजन के बजाय किराया-खोजी प्रणालियों में नेविगेट करने में मोड़ देता है।
    - भारत में भ्रष्टाचार की प्रत्यक्ष लागत GDP का लगभग 0.5% वार्षिक है, और अप्रत्यक्ष वृद्धि प्रभावों को शामिल करने पर कुल हानि GDP का 1% से 1.5% तक हो सकती है।
    - यह अरबों डॉलर की हानि के बराबर है, जो अन्यथा अवसंरचना, स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश किए जा सकते थे।
  - **अनुपालन संरचना का बोझ:** भारत की शासन प्रणाली की एक बड़ी संरचनात्मक खामी अत्यधिक जटिल नियामक वातावरण है। वर्तमान में उद्यमियों को भारतीय व्यापार विनियमों में निहित 26,134 कारावास प्रावधानों का सामना करना पड़ता है।
  - **व्यवसाय का अपराधीकरण:** सहायक नीतियों जैसे *संघ बजट 2026-27* की ₹10,000 करोड़ *SHAKTI* पहल के बावजूद, एक फार्मा स्टार्टअप को 998 अनुपालन दायित्वों का पालन करना पड़ता है, जिनमें से लगभग 49% संभावित आपराधिक दायित्व रखते हैं।

### CPI का महत्व

- **शासन गुणवत्ता का संकेतक:** CPI केवल रिपोर्ट किए गए मामलों को नहीं, बल्कि धारित भ्रष्टाचार को मापता है। यह 13 डेटा स्रोतों को एकत्र करता है, जिनमें विशेषज्ञ आकलन और व्यापार सर्वेक्षण शामिल हैं।
- CPI नीति की विश्वसनीयता और शासन की वैश्विक धारणा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

- **आर्थिक निहितार्थ:** भ्रष्टाचार लेन-देन लागत, नियामक अनिश्चितता और किराया-खोजी व्यवहार को बढ़ाता है।
  - वैश्विक अनुमान बताते हैं कि भ्रष्टाचार वैश्विक GDP का लगभग 5% व्यय करता है।
  - विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भ्रष्टाचार और आर्थिक वृद्धि के बीच नकारात्मक संबंध पाया गया है।

### संबंधित प्रयास और पहल

- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI):** भारत ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) को बैंक खातों और डिजिटल पहचान से जोड़कर कल्याणकारी योजनाओं में रिसाव को न्यूनतम किया है।
- **भुगतान का डिजिटलीकरण:** RBI का डिजिटल भुगतान सूचकांक (RBI-DPI) मार्च 2025 में 493.22 से बढ़कर सितंबर 2025 में 516.76 हो गया है, जो ट्रेस करने योग्य डिजिटल लेन-देन की सुदृढ़ सम्बन्ध को दर्शाता है।
- **कराधान और खरीद:** GST नेटवर्क ने अप्रत्यक्ष करों में औपचारिकता और ट्रेसबिलिटी में सुधार किया है, जबकि ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल्स ने विवेकाधिकार शक्ति तथा किराया-खोजी अवसरों को प्रभावी रूप से कम किया है।
- **लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013:** स्वतंत्र भ्रष्टाचार-रोधी लोकपाल की स्थापना; उच्च अधिकारियों सहित सार्वजनिक सेवकों को कवर करता है।
- **सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम, 2005:** नागरिकों को सरकारी जानकारी प्राप्त करने का अधिकार देता है; पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाता है।
- **केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC):** शीर्ष सतर्कता संस्था; और केंद्र सरकार में भ्रष्टाचार-रोधी गतिविधियों की निगरानी करता है।
- **महालेखा परीक्षक (CAG):** सार्वजनिक व्यय का ऑडिट करता है और वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

### आगे की राह

- **नियामक सरलीकरण:** आपराधिक प्रावधानों को कम करना और व्यापार करने में सुगमता को बढ़ावा देना।
- **न्यायिक और संस्थागत सुधार:** विवादों का शीघ्र समाधान और निगरानी संस्थाओं को सुदृढ़ करना।
- **पारदर्शिता उपाय:** ओपन डेटा सिस्टम और सार्वजनिक खरीद सुधार।
- **लोकतांत्रिक ताकतों का लाभ उठाना:** भारत के पास पहले से ही सुदृढ़ संवैधानिक नींव, सक्षम न्यायपालिका, प्रतिस्पर्धी चुनाव और सुदृढ़ डिजिटल क्षमता है।
  - इन वर्तमान स्तंभों का उपयोग बेहतर पारदर्शिता ढाँचे बनाने के लिए किया जाना चाहिए।

### निष्कर्ष

- भारत की आर्थिक वृद्धि उल्लेखनीय रही है, लेकिन इसके शासन संकेतक अपेक्षाकृत स्थिर बने हुए हैं। संस्थागत गुणवत्ता को सुदृढ़ करना, पारदर्शिता में सुधार करना और नियामक ढाँचे को सरल बनाना आवश्यक है ताकि शासन को आर्थिक महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप बनाया जा सके।

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न:** भ्रष्टाचार केवल एक कानूनी मुद्दा नहीं है, बल्कि यह शासन और विकास से जुड़ी चुनौती भी है। भारत में भ्रष्टाचार की प्रकृति, कारणों एवं निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।

Source: TH